



## International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

# उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की अभिरूचि पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम का प्रभावात्मक अध्ययन

\*<sup>1</sup> डॉ. शालिनी त्यागी एवं <sup>2</sup>ओम कुमार

<sup>1</sup> प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

<sup>2</sup> शोधार्थी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

### Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 10/Aug/2025

Accepted: 10/Sep/2025

### \*Corresponding Author

डॉ. शालिनी त्यागी

प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, मेरठ कॉलेज, मेरठ,  
उत्तर प्रदेश, भारत।

### सारांश:

महिला शिक्षा के प्रति भारत के १५वें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बालिकाओं को शिक्षित करने तथा उनकी रक्षा करने पर बल दिया है। जब भविष्य में भारत एक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भारत सरकार का एक सार्वजनिक अभियान है। जिसे २२ जनवरी २०१५ को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था। जिसका उद्देश्य जागरूकता पैदा करना और लड़कियों के लिए कल्याणकारी सेवाओं की उपलब्धता में सुधार करना है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के द्वारा बेटियों के गिरते अनुपात, शिक्षा के स्तर, सामाजिक समानता लाने, जीवन की महत्ता को समझने, शिक्षित करने आदि को मुख्य रूप से प्रमुख बिंदु के रूप में जाना जाता है। तथा इस समाज में संकीर्ण सोच को समाप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया जाता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, भारत में बालिकाओं को बचाने के लिए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ बालिकाओं के खिलाफ अपराध, विशेष रूप से कन्या भ्रूण हत्या और लैंगिक असमानता को रोकने के लिए, एक जागरूकता अभियान है। शोध का उद्देश्य-उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की अभिरूचि पर 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के प्रभाव तथा कार्यक्रम के प्रति छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना। शोधकर्ता ने निष्कर्ष में यह पाया कि योजना का बेटियों की अभिरूचियों पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति छात्राओं एवं अध्यापकों का सार्थक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण है।

**मुख्य शब्द:** बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम, छात्राओं की अभिरूचि, छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोण

### प्रस्तावना:

दुनिया की आबादी का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का है। महिलाओं के लिए शिक्षा एक देश की अर्थव्यवस्था की सूक्ष्म ईकाई का गठन करने वाले घर के स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका है। इस संदर्भ में यह तर्क दिया जा सकता है कि महिला शिक्षा की कमी, देश के आर्थिक विकास के लिए बाधा हो सकती है। भारत में महिलाएं, पुरुषों की तुलना में बहुत कम शिक्षा प्राप्त करती हैं। २०११ की जनगणना के अनुसार महिलाओं की साक्षरता दर ६५.२६% और पुरुषों की ८२.१४% है। सरकार और स्वैच्छिक संगठन द्वारा महिलाओं की शिक्षा प्राप्ति में सुधार के लिए ईमानदार प्रयास किया गया है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पर नीतियों और अवसंरचनात्मक समर्थन में परिवर्तन महिला शिक्षा के प्रति भारत के १५वें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बालिकाओं को शिक्षित करने तथा उनकी रक्षा करने पर बल दिया है। जब भविष्य में भारत एक महाशक्ति बनने की

ओर अग्रसर है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भारत सरकार का एक सार्वजनिक अभियान है। जिसे २२ जनवरी २०१५ को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था। जिसका उद्देश्य जागरूकता पैदा करना और लड़कियों के लिए कल्याणकारी सेवाओं की उपलब्धता में सुधार करना है। वर्तमान में कम बाल लिंग अनुपात में सुधार और बालिकाओं के मूल्य में वृद्धि करने के लिए इस अभियान का ध्यान तीन आयामी रणनीतियों पर है: -

1. लिंग आधारित लिंग चयनात्मक गर्भपात को रोकना
2. बालिकाओं के अस्तित्व और संरक्षण को सुनिश्चित करना
3. बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना

### अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बालिकाओं के लिंग अनुपात को सुरक्षित करना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिसमें बालिकाओं के प्रति हो रहे अमानवीय कार्यों एवं व्यवहार आदि का ध्यान समाज की ओर

आकर्षित करना है। जिसमें कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम बालिकाओं के अस्तित्व को बचाना, उनकी शिक्षा, सुरक्षा तथा भागीदारी को सुनिश्चित करना है। इस योजना के द्वारा बालिकाओं की प्रति हो रहे अत्याचारों और दुष्कर्मों पर रोक लगाना है। इस शोध का उद्देश्य भी बालिकाओं की शिक्षा नामांकन अनुपात को बढ़ाकर देश में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना है। बालिकाओं की सोच भी बालकों की तरह से ही सुदृढ़ करना एवं आत्मविश्वास को बढ़ावा देना है।

लड़कियों को आज भी बेटों के समान सम्मान नहीं मिल रहा है। विद्यालयों में उनकी नामांकन संख्या घट रही है। देश के कई हिस्सों में आज भी जन्म लेने की अनुमति नहीं है और अगर जन्म ले भी लिया तो वह उन सभी सुविधाओं से वंचित रखी जाती है जो किसी भी बालिका के मानसिक, शारीरिक व सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। भारत देश विविध संस्कृति वाला देश है जिसे कृषि प्रधान देश भी कहा जाता है। इसमें विविध धर्म, जातियाँ एवं समुदाय के जीव निवास करते हैं। देश के संस्कृति प्रधान होने के साथ-साथ अनेक परंपराओं, रीति-रिवाजों, उत्सवों को जीवन का अभिन्न अंग बनाए हुए हैं। देश में पुरुष एवं महिला के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं परंतु कुछ सामाजिक कुरीतियों एवं मनुष्य कुंठा जीवन में समानता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में विष डालने का कार्य करती है। जिसे मानसिक संकीर्णता कहना उचित होगा। जिसका प्रभाव समाज के रहन-सहन, जीवन व मृत्यु पर पड़ा है। समाज में पुरुषों को परिवार का मुखिया माना जाता रहा है। जिससे स्त्रियों को व्यावहारिक रूप से कम स्थान पर आंका जाता है तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा पर खतरा मानकर जन्म से पूर्व ही अवस्था में कन्या की हत्या कर दी जाती है। समाज में महिलाओं को अनेक प्रताड़ना एवं दुखों का सामना करना पड़ता है। हिंसात्मक, शारीरिक, मानसिक जीवन समाप्त करने संबंधी, उत्पीड़नों को सहन करना पड़ता है। इसलिए देश में समानता एवं क्षमता हेतु जागरूक होने की आवश्यकता है। सभी को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो एवं जीवन जीने की सभी को स्वतंत्रता हो, इस हेतु देश में पहल के रूप में नए युग के नए कार्यक्रम बेटों बचाओ एवं बेटों पढ़ाओ का क्रियान्वयन किया गया है। हमें समाज की विचारधारा को मानसिक रूप से बदलने की अत्यंत आवश्यकता है। जिससे बेटियों के जीवन को बचाया जा सके तथा कन्या भ्रूण हत्या पर लगाम लग सके। और बेटियों को बेटों के समान सामाजिक प्रतिष्ठा तथा समान दर्जा मिल सके। सभी को, चाहे गरीब हो या चाहे अमीर हो, अपनी मानसिकता और संकीर्ण सोच में बदलाव लाना आवश्यक हो गया है। महिला हो या पुरुष, बेटा हो या बेटा, सभी को जीवन जीने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त है तथा बेटा और बेटा दोनों के जन्म लेने पर परिवार और आस-पड़ोस में खुशी का भाव उत्पन्न होना चाहिए। उनकी परवरिश में भी कोई भी भेदभाव, किसी भी स्तर पर न किया जाए। कुंठाओं, कटाक्षों, तनाव और तिरस्कारों का सामना सामाजिक और संवेगात्मक रूप से किसी को भी ना करना पड़े, यही जीवन का एक मूल सिद्धांत है। बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम के द्वारा बेटियों के गिरते अनुपात, शिक्षा के स्तर, सामाजिक समानता लाने, जीवन की महत्ता को समझने, शिक्षित करने आदि को मुख्य रूप से प्रमुख बिंदु के रूप में जाना जाता है। तथा इस समाज में संकीर्ण सोच को समाप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया जाता है। बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ योजना, भारत में बालिकाओं को बचाने के लिए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ बालिकाओं के खिलाफ अपराध, विशेष रूप से कन्या भ्रूण हत्या और लैंगिक असमानता को रोकने के लिए, एक जागरूकता अभियान है। उपरोक्त तथ्यों का ध्यान में रखते हुए उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की अभिरूचि पर बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम का प्रभावात्मक अध्ययन प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है।

**साहित्य अध्ययन-** विभिन्न शोधकर्ताओं के द्वारा बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम के कई पक्षों पर अध्ययन किया गया है। परंतु उच्चप्राथमिक स्तर पर ग्रामीण छात्राओं की अभिरूचि पर बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ के प्रभाव का अध्ययन का विचार अपने- अपने स्वरूप व प्रवृत्ति में भिन्न है एवं शोध साहित्य का प्रारूप भी भिन्न है। बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम पर सम्बंधित साहित्य भी उचित तारतम्य में उपलब्ध नहीं है फिर भी यहां पर सम्बंधित साहित्य का अध्ययन विभिन्न श्रेणियों में किया गया है।

**यादव सीमा (२०२४)-** ने लैंगिक समानता एवं लैंगिक भेद के बारे में शिक्षा के लिए बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम का अध्ययन किया। इन्होंने सुकन्या समृद्धि योजना का अध्ययन किया जिसमें बालिकाओं को आर्थिक लाभ दिया गया है। बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ योजना को बेटियों के लिए एक शक्तिशाली पक्ष पाया। कार्यक्रम बेटियों के लिए शिक्षा लैंगिक सामान्य बेटियों के सभी पक्षों का सर्वांगीण विकास पर बल देता है। बेटियों का भविष्य उज्ज्वल बनाने में अहम भूमिका निभाता है। बेटियों के जेंडर भेदभाव शिक्षा की पहुंच और सामाजिक दृष्टिकोण में सुधार पाया गया जो शोधकर्ता ने अपने शोध में बताया है।

**उमेश चंद्र पांडे, छवि कुमार (२०२०)-** सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं, शैक्षिक स्थिति, रोजगार, अवसर, राजनीतिक भागीदारी, अपमान, उत्पीड़न, शोषण, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि द्वारा निर्धारित लिंग भेदभाव पितृसत्तात्मक व्यवस्था में जहां पुरुष जैविक श्रेष्ठता की भावना से महिलाओं पर अत्याचार करते हैं, उनका शोषण करते हैं और उन पर हावी होते हैं, इससे दमन, भेदघात और हिंसा का दुष्प्रक्र बनता है। ग्रीन जॉब्स में संभावनाएं बढ़ रही हैं जैसे कि मत्स्य पालन, कृषि, वानिकी, मिट्टी के बर्तन, इको-टूरिज्म आदि में काम करने वाली महिलाएं। ताकि समान अवसरों का निर्माण करके लिंग-समानता कारकों के तरीके और संभावनाएं व्यापक हों। यदि लिंग असमानता बनी रहती है तो इससे समाज में बहुत बड़ा शून्य पैदा होगा, इसलिए 'लिंग उत्तरदायी बजट' के माध्यम से लिंग को मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

अभिषेक (२०१९) ने अध्ययन में पाया कि उत्तर प्रदेश में २०१७-१८ में बेटियों के जन्मदर २०१८-१९ के सापेक्ष १०% वृद्धि दर्ज की गई है। यह बात बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ योजना के प्रभाव को दर्शाती है परंतु सरकारी योजनाओं के प्रभाव का प्रतिशत बहुत कम है इस योजना का प्रभाव उत्तर प्रदेश के दिल्ली राजधानी क्षेत्र के जिलों में काफी सुधार दिखाई पड़ता है। स्कूलों में नामांकन वृद्धि भी पाई गई है। बेटियां उच्च शिक्षा को भी प्राप्त कर रही हैं। अनेक क्षेत्रों में देश का नाम रोशन कर रही हैं बेटे और बेटियों में भेदभाव काफी मात्रा में काम पाया गया है। अध्ययन में पाया गया कि मुस्लिम समुदाय की बच्चियों स्कूलों में संख्या बढ़ रही है। उनका रुझान भी बढ़ा है। इस योजना का प्रभाव उत्तर प्रदेश के अधिकतर जिलों में अच्छा दिखाई दे रहा है। कानपुर, अलीगढ़, बिजनौर, फिरोजाबाद मुजफ्फरनगर में प्रभाव सामान्य से कम पाया गया है। जबकि लखनऊ में काफी अच्छा प्रभाव रहा है। अध्ययन में पाया गया कि उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में पिछले वर्षों के मुकाबले लड़कियों की संख्या में वृद्धि हुई है, परंतु कुछ जिले लड़कियों के लिए अभिशाप साबित हो रहे हैं।

## शोध के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं को अभिरूचि पर बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटों बचाओ बेटों पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

## शोध परिकल्पनाएँ

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की अभिरुचि पर बेटी बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति छात्राओं एवं अध्यापकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## शोध प्रारूप

अध्ययन को व्यवस्थित एवं सफल बनाने के लिए अनुसंधान प्ररचना का निर्माण करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य, क्षेत्र अध्ययन सर्वेक्षण पर आधारित है। अनुसंधान संरचना में, तथ्यों को एकत्रित करने के स्रोतों को कई भागों में विभाजित किया गया है जिनमें उच्च प्राथमिक स्कूल, समाज, समुदाय, योजना को प्रभावित एवं क्रियान्वित करने वाले कारकों को सम्मिलित किया गया है। छात्राओं की अभिरुचि का अध्ययन भी अभिरुचि प्रश्नावली के द्वारा किया गया।

**प्रतिदर्श-** शोधकर्ता ने सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का इस्तेमाल किया। यह आबादी से नमूना चुनने के लिए संभाव्यता नमूनाकरण विधि है। मुजफ्फरनगर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कुल ४०० छात्राओं का चयन किया गया है।

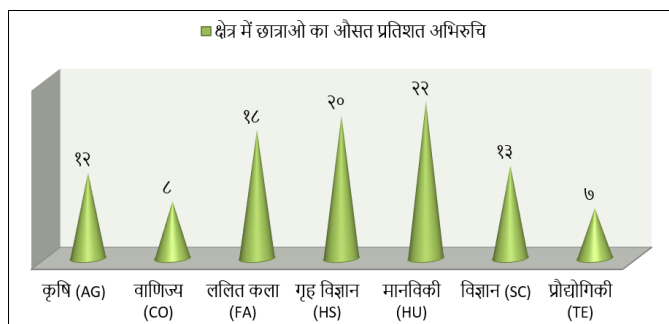
## तथ्य संकलन के उपकरण

1. अभिरुचि के मापन के लिए डॉ एस पी कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक अभिरुचि अभिलेख (EIR)
2. शोध सर्वेक्षण प्रश्नावली

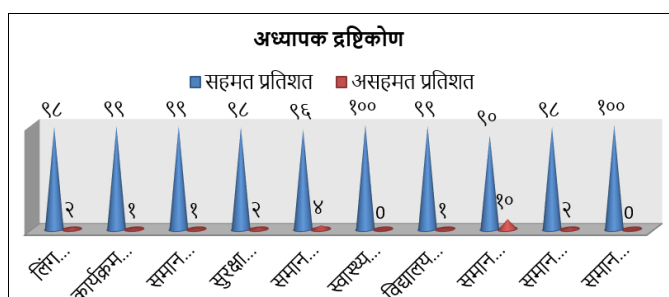
**अध्ययन का सीमांकन-** शोधकार्य, शोध अध्ययन में निर्धारित चरों, क्षेत्र, न्यादर्श, शोध उपकरण तथा शोध प्रारूप तक सीमित है।

## आंकड़ों का विश्लेषण

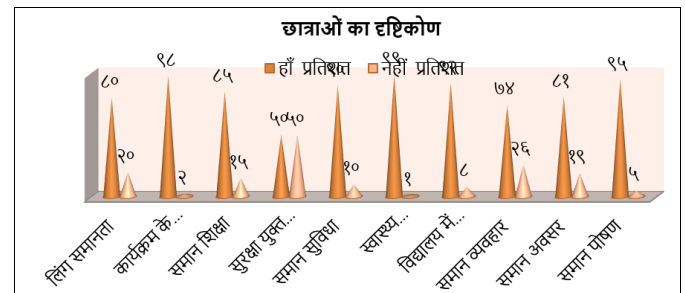
**ग्रामीण छात्राओं की अभिरुचि पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रभाव की स्थिति**



## उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण



## उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण



## निष्कर्ष:

शोधकर्ता ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की अभिरुचि स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण किया। जिससे यह पता चलता है कि योजना का प्रभाव बेटीयों की अभिरुचि पर पड़ा है इससे परिकल्पना की असार्थक रूप से पुष्टि होती है। और कार्यक्रम का छात्राओं की अभिरुचि पर प्रभाव पड़ा है। अतः योजना का बेटीयों की अभिरुचियों पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव है।

शोधकर्ता ने निष्कर्ष में पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति छात्राओं एवं अध्यापकों का सार्थक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण है। उच्च प्राथमिक स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के प्रति छात्राओं का सार्थक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण है।

## संदर्भ सूची:

1. गुप्ता आर, निमेश आर, सिंघल जीएल, भल्ला पी, प्रिंजा एस. बालिकाओं को बचाने के लिए भारत के राष्ट्रीय कार्यक्रम की प्रभावशीलता: हरियाणा
2. राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार।  
<http://www.nmew.gov.in/index.php>
3. वर्षा एस, शीला एस. लिंग सशक्तिकरण और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के मूल्यांकन और निर्माण पर एक अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ रिसर्च ह्यूमन आर्ट्स लिट. 2018; 6:227-34
4. कृतिका के. वैशाली जिले में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान का तुलनात्मक अध्ययन। 2017  
उपलब्ध: <http://krishikosh.egranth.ac.in/handle/1/581008266>
5. ऑस्टिन ई. एण्ड ईरान वी (1999) पर्सनललिटी एण्ड इन्डिविजुअल डिशंसित।
6. अरुण कुमार सिंह (2015) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियों।
7. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम (2015)
8. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ भारत सरकार।  
उपलब्ध: <http://wcd.nic.in/BBBPScheme/main.htm>
9. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम: बालिकाओं को बचाने के लिए एक सही पहल, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ वर्मा आर एट अल. इंटर जे कम्युनिटी मेड पब्लिक हेल्थ. 2018 जून;5(6):2153-2155
10. सुधाकर, जी. जे. (2018-19), "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के विशेष संदर्भ में बालिकाओं की स्थिति।" भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, 79(2018-19): 875-882।
11. राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण मिशन। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार। उपलब्ध: <http://www.nmew.gov.in/index.php>
12. डॉ. ए.वी. भटनागर, डॉ. अनुराग भटनागर (2011) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली

13. दर्शन के. नारंग, रंजना वैष्णव और कविता कोराडिया: बाल विवाह: निर्धारक और मनो-सामाजिक परिणाम, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, पीपी 1-2।
14. मधु देवी, महिला: भारतीय और पश्चिमी अवधारण, अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल, अनुसंधान, समीक्षा और मूल्यांकन, पृ. सं. 74.
15. शर्मा, गजानन, प्राचीन भारतीय साहित्य में महिलाएँ, पृष्ठ संख्या 42-43, रचना प्रकाशन, 45-ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद। कस्तवार, रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2006, पृ. 64
16. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, दिशानिर्देश, नवंबर, 2018. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार